Total Pages : 7

3642/P

B.A. (III Year) (Private) Examination, 2018

SANSKRIT

Paper–II

(इतिहास, दर्शन, अनुवाद, व्याकरण एवं निबंध)

Time allowed : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).

Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इकाई-I

(i) कालिदास के कितने नाटक हैं? नाम लिखिये।

(ii) 'श्रीमद्भगवद्गीता' किस महाकाव्य का अंश है?

इकाई-II

(iii) बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्यसत्य कौनसे हैं?

(iv) जैन दर्शन के पञ्च-महाव्रतों का नामोल्लेख कीजिए।

इकाई-III

(v) 'राम के साथ सीता जाती है' का संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए।

(vi) 'पुस्तक पढ़कर लिखता है' का संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए।

इकाई-IV

(vii) 'पठितुम्' में प्रकृति-प्रत्यय बताइये?

(viii) 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द लिखकर उसमें प्रकृति-प्रत्यय बताइये।

इकाई-V

(ix) 'राजस्थान वीरभूमि है' इस पर दो पंक्तियाँ संस्कृत में लिखिये।

(x) 'संस्कृत-भाषा का महत्त्व' पर दो वाक्य संस्कृत में लिखिये।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. संस्कृत गद्य-साहित्य की प्रमुख कृतियों का परिचय दीजिए।

अथवा

रामायण व महाभारत में वर्णित आदर्शों का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।

इकाई-II

3. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए :

नासतो विद्यते भवो नाभावो विद्यते सतः।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः।।

अथवा

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूमाते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

इकाई-III

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

इस संसार में सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान का आधारभूत स्त्रोत वेद हैं। मनोविज्ञान का वर्णन वेदों में प्रकीर्ण रूप में तथा सूक्त रूप में दोनों ही तरह से मिलता है। शिवसंकल्प सूक्त में यह वर्णन सारगर्भित रूप से उपलब्ध है। यह शुक्ल यजुर्वेद के चौतीसवें अध्याय का प्रथम सूक्त है। इसमें ऋषि के द्वारा प्रत्येक मन्त्र के तीन चरणों में मन का स्वरूप, महत्त्व तथा कार्य बताकर चौथे चरण में अपने मन के शिवसंकल्पमय होने की प्रार्थना की गई है।

अथवा

भगवान् बुद्ध ने अपने जीवन में जहाँ-जहाँ निवास किया, वहाँ-वहाँ सब जगह अशोक ने तीर्थाटन किया। यह तीर्थ-यात्रा नेपाल देश के कुशी क्षेत्र में समाप्त हुई थी। उसके बाद अशोक ने आठ वर्ष तक संन्यस्त जीवन बिताया। अशोक का व्यक्तित्व संसार के राजाओं के इतिहास में अद्‌भुत और अपूर्व है। मौर्यवंश का अन्तिम सम्राट वृहद्रथ था। इसका सेनापति पुष्यमित्र था।

इकाई-IV

5. किन्हीं 'चार' पदों की सूत्र-निर्देशपूर्वक प्रकृति-प्रत्यय बताइये :

दत्तम्, गन्तव्यम्, चटका, गव्यम्, गेयम् श्रवणीयम्, पठन्, हसित्वा

इकाई-V

6. किसी एक विषय पर संस्कृत-भाषा में निबन्ध लिखिये :

(i) भारतीय-संस्कृतिः

(ii) उद्योगस्य महत्त्वम्

खण्ड-स

इकाई-I

7. बाणभट्ट की कृतियों का संक्षेप में परिचय दीजिए।

इकाई-II

8. 'अनेकान्तवाद' का विवेचन कीजिए।

इकाई-III

9. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

संस्कृत के व्याकरण-ग्रन्थों में अष्टाध्यायी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्याकरण सम्बन्धी सभी प्रश्नों का उत्तर इसमें प्राप्त हे। अष्टाध्यायी संस्कृत में प्राचीन और अवाचीन वाङ्मय में सूर्य के समान प्रकाशवान है। अष्टाध्यायी की व्याख्या के लिए लघुसिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थ विद्यमान हैं। सिद्धान्तकौमुदी ग्रन्थ में इस तरह के प्रयोग दिखाई देते हैं, जिनके सम्यक् अध्ययन से उस काल की सामाजिक व्यवस्था का ज्ञान होता है।

अथवा

'जहाँ विषय को व्यवस्थित रूप से संक्षिप्त शैली में प्रस्तुत किया जाता है, उसे सूत्र साहित्य कहते हैं। संक्षिप्तता, स्पष्टता और बोधगम्यता सूत्र साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं। भारतीय वाङ्मय में सूत्र साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस साहित्य के सूत्र-पद्धति में लिखित होने से यह सरलतापूर्वक कण्ठस्थ हो सकता है। वैदिक-साहित्य में सूत्रों का काल तत्कालीन अध्ययन और चिन्तन की एक परम्परा का प्रतिनिधि है।'

इकाई-IV

10. निम्नलिखित सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिये :

(i) तस्य भावस्त्वतलौ

(ii) तदस्यास्त्यस्मिन्निति मुतप्

(iii) दण्डादिभ्यो यत्

(iv) तुमुण्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्

(v) ठस्येक:

इकाई-V

11. 'विद्याया: महत्त्वम्' विषय पर संस्कृत में निबन्ध लिखिये।